23

परदेशी और बाहरी

(11:8-22)

इस पाठ का शीर्षक इब्रानियों 11:13 में मिलता है। पहले हमने ''निराशा के लिए परमेश्वर की दवाई'' देखी थी। इस पाठ के लिए वचन को ''सांसारिकता और भौतिकता के लिए परमेश्वर की दवाई'' माना जा सकता है। यह पाठ अब्राहम पर केन्द्रित है (यशायाह 41:8; उत्पत्ति 15:6; गलातियों 3:29)।

आवश्यकता: एक नए दृष्टिकोण की

अब्राहम की तरह हम इस पृथ्वी पर ''परदेशी और बाहरी'' हैं। पाठ के प्रत्येक भाग में हम पहले अब्राहम को (इसहाक और याकूब के साथ) देखेंगे। फिर व्यक्तिगत प्रासंगिकता बनाते हुए हम इब्रानियों की पुस्तक के पहले पाठों पर ध्यान करेंगे।

अब्राहम और अन्य पुरखे

परमेश्वर द्वारा बुलाए जाने पर अब्राहम मैसोपोटामिया की तराई में था (आयत 8)। ''यह न जानते हुए कि किधर जाता है, वह निकल पड़ा''; प्रभु ने उसे यह समझाने के लिए कि वह कहां जा रहा है यात्रा विवरण नहीं दिया।

अब्राहम ने ''जैसे पराए देश में परदेशी रहकर इसहाक और याकूब समेत, ... तम्बुओं में वास किया'' (आयत 9)। सामाजिक स्तर पर एक बाहरी निवासी गुलाम से बढ़कर नहीं था। अब्राहम और उसके परिवार के लोग ''परदेशी और बाहरी'' थे (आयत 13)। ''परदेशी'' विदेशी लोग थे। KJV में बाहरी के स्थान पर ''यात्री'' है। यात्री उसे कहते हैं जो एक स्थान पर नहीं रहता, बल्कि वहां से गुज़र रहा होता है। सारा की मृत्यु पर शोकित अब्राहम ने उस देश के वासियों से कहा था, ''मैं तुम्हारे बीच पाहुन और परदेशी हूं'' (उत्पत्ति 23:4)।

इब्रानी मसीही और हम

इब्रानियों 13:12-14 में आगे देखें जो 11:8-22 में कही बात पर आधारित है। अब्राहम की तरह हमें बुलाया गया, जिसमें हमें सुसमाचार के द्वारा बुलाया गया है (2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। हमारा पक्का निवास स्वर्ग है। इस संसार में से हम होते हुए गुज़र रहे हैं (2 कुरिन्थियों 5:1-8)।

आवश्यकता: एक नये ज़ोर की

हम ''पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी'' हैं, इस कारण हमारा ज़ोर इस जीवन पर नहीं बल्कि

आने वाले संसार पर होना चाहिए। फिर से हम पहले अब्राहम को और फिर अपने आपको देखेंगे।

अब्राहम और अन्य लोग

अब्राहम और उसके परिवार के लोगों के जीवनों में ज़ोर अब और अभी की बातों पर नहीं था। अब्राहम के पास मकापेला की गुफ़ा के अलावा कोई सम्पत्ति नहीं थी, जिसका इस्तेमाल उसने कब्रिस्तान के लिए था (उत्पत्ति 23:17-20)।

कई आयतों से अब्राहम और अन्य विश्वासी लोगों की प्राथमिकताओं का जिनके नाम दिए गए हैं पता चलता है। अब्राहम ''उस स्थिर नेववाले नगर की बाट जोहता था, जिसका रचने वाला और बनाने वाला परमेश्वर है'' (इब्रानियों 11:10; देखें प्रकाशितवाक्य 21:2)। वह और उसकी सन्तान ''स्वदेश की खोज में'' थे (इब्रानियों 11:14)। ''स्वदेश'' शब्द *patris* से लिया गया है, जिसका अर्थ है ''पिता का देश।'' वे ''एक उत्तम अर्थात स्वर्गीय देश के अभिलाषी'' (आयत 16क) थे। जिस कारण परमेश्वर ''उनका परमेश्वर कहलाने में उनसे नहीं लजाता'' (आयत 16ख; देखें निर्गमन 3:6, 15; मत्ती 22:32)।

इब्रानी मसीही और हम

इब्रानियों की पुस्तक के मूल पाठकों को आत्मिक बातों के महत्व की समझ होनी और सबसे बढ़कर अनन्तकाल के महत्व की समझ होनी आवश्यक थी। हमें भी वह समझ होनी आवश्यक है। शारीरिक लट्ठे हमारी आंखों में लटकते हैं, परन्तु जो दिखाई दे सकता है वह केवल अस्थाई है। हमारे जीवन में आने वाले संसार पर ज़ोर दिया जाना चाहिए। हमें ''स्वर्गीय बुलाहट'' मिली है (इब्रानियों 3:1)। हमारी नागरिकता स्वर्ग में है (फिलिप्पियों 3:20)। हमारा प्रभु हमारे खज़ाने (मत्ती 6:20) और हमारी आशा (देखें इब्रानियों 6:19, 20) के साथ वहीं पर है (यूहन्ना 14:2, 3)। हमारे नाम वहीं पर लिखे हुए हैं (लूका 10:20)। यीशु ने हमें अपने साथ रखने के लिए वहां ले जाने की प्रतिज्ञा की है (यूहन्ना 14:3)।

यदि हम अपने वास्तविक और पक्के निवास के रूप में पृथ्वी का नहीं बल्कि स्वर्ग का ध्यान करें तो हमारे जीवनों में कितना बड़ा अन्तर आ जाएगा! यह हमारे समय और धन को खर्चने और अपने तोड़ा का इस्तेमाल करने के ढंग को प्रभावित करेगा। यह हमारे किस्मत को देखने के ढंग को बदल देगा। यह हमारे जीवन की *हर बात* को प्रभावित करेगा।

आवश्यकता: असली विश्वास

जीवन का ऐसा विचार रखने अर्थात अनन्त बातों पर ज़ोर देने के योग्य हमें कौन बना सकता है? उत्तर है *विश्वास*।

अब्राहम और साथी

आयतें 8 और 9 ज़ोर देती हैं कि अब्राहम का व्यवहार सही ही था, क्योंकि उसे विश्वास था। ''*विश्वास ही से* अब्राहम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ...'' (आयत 8क)। अनुवादित

शब्द ''बुलाया गया'' वर्तमान काल में है, जो यह सुझाव देता है कि बुलाए जाने के साथ ही उसने आज्ञा मान ली थी। ''ऐसी जगह निकल गया जिसे न जानता था'' (आयत 8ख)–अन्य शब्दों में वह केवल विश्वास के अधार पर अपने पुरखाओं के नगर को छोड़ गया। ''*विश्वास ही से* [अब्राहम]'' कनान और आस-पास के क्षेत्रों में एक सौ साल तक ''परदेशी'' रहा (आयत 9)।

अब्राहम के परिवार में भी वही विश्वास पाया जाता था। ''विश्वास से सारा ने ... गर्भ धारण करने की सामर्थ पाई; क्योंकि उसने प्रतिज्ञा करने वाले को सच्चा जाना था'' (आयत 11क)। यहां ध्यान सारा के विश्वास की सामर्थ पर नहीं, बल्कि परमेश्वर की वफ़ादारी अर्थात उसके विश्वास अर्थात जिसके ऊपर उसे विश्वास था पर है। ''विश्वास ही से अब्राहम ने ... इसहाक को बलिदान चढ़ाया'' (आयत 17क; देखें आयतें 18, 19)। ''विश्वास ही से इसहाक ने याकूब और एसाव को ... आशीष दी'' (आयत 20क)। ''विश्वास ही से याकूब ने ... एक-एक को आशीष दी, और ... दण्डवत किया'' (आयत 21)। ''विश्वास ही से यूसुफ ने, जब वह मरने पर था, तो इस्राइल की सन्तान के निकल जाने की चर्चा की'' (आयत 22क)।

परिणाम यह हुआ कि यह ''ये सब विश्वास ही की दशा में मरे'' (आयत 13)। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक अपने पाठकों को यही बताना चाहता था और परमेश्वर हमें भी वही बताना चाहता है (देखें प्रकाशितवाक्य 14:13)!

इब्रानी पाठक और हम

हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता विश्वास की आवश्यकता है (इब्रानियों 11:6; रोमियों 10:17)। हमें उस विश्वास की आवश्यकता है जो परमेश्वर की बात को वैसे ही ले जैसे अब्राहम ने लिया। हमें उस विश्वास की आवश्यकता है, जो परमेश्वर के वचन पर वैसे ही अमल करे (याकूब 2:14-26) जैसे अब्राहम ने किया।

कई बार इस संसार की समस्याएं हमें हराने के लिए धमकाती हैं। हम कैसे बच सकते हैं? विश्वास के द्वारा हम विजय पाते हैं। परमेश्वर विश्वास के द्वारा रहने और विश्वास में मर जाने में हमारी सहायता करे।

टिप्पणी

[1]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टेस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 133.